मधुर प्रेम मिलन-2

“प्रेषिका : स्लिमसीमा ‘मधुर, क्या मैं एक बार आपके हाथों को चूम सकता हूँ ?’ मेरे अधरों पर गर्वीली मुस्कान थिरक उठी। अपने प्रियतम को प्रणय-निवेदन करते देख कर रूप-गर्विता होने का अहसास कितना मादक और रोमांचकारी होता है, मैंने आज जाना था। मैंने मन में सोचा ‘पूरी फूलों की डाली अपनी खुशबू बिखरने के लिए […] ...”

Story By: (premguru2u)
Posted: Monday, July 11th, 2011
Categories: इंडियन बीवी
Online version: मधुर प्रेम मिलन-2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

मधुर प्रेम मिलन-2

प्रेषिका : स्लिमसीमा
‘मधुर, क्या मैं एक बार आपके हाथों को चूम सकता हूँ ?’

मेरे अधरों पर गर्वीली मुस्कान थिरक उठी। अपने प्रियतम को प्रणय-निवेदन करते देख कर रूप-गर्विता होने का अहसास कितना मादक और रोमांचकारी होता है, मैंने आज जाना था। मैंने मन में सोचा ‘पूरी फूलों की डाली अपनी खुशबू बिखरने के लिए सामने बिछी पड़ी है और वो केवल एक पत्ती गुलाब की मांग रहे हैं !’

मैंने अपने हाथ उनकी ओर बढ़ा दिए।
उन्होंने कांपते हाथों से मेरे दोनों हाथों को एक बार फिर से पकड़ लिया और होले से उन पर अपने होंठ लगा दिए। उनकी छुअन मात्र से ही मेरा पूरा बदन एक अनोखे आनंद और रोमांच से झनझना उठा।

चुम्बन प्रेम का प्यारा सहचर होता है। चुम्बन हृदय स्पंदन का मौन सन्देश और प्रेम गुंजन का लहराता हुआ कम्पन होता है। यह तो नव जीवन का प्रारम्भ है।

‘ओ… मेरे प्रेम के प्रथम चुम्बन ! मैं तुम्हें अपने हृदय में छुपा कर रखूँगी और अपने स्मृति मंदिर में किसी अनमोल खजाने की तरह सारे जीवन भर संजोकर अपने पास रखूंगी’

कुछ पलों तक वो अपने होंठों से मेरी हथेलियों को चूमते रहे। उनकी गर्म साँसें और हृदय की धड़कन मैं अपने पास महसूस कर रही थी। मेरा भी रोम रोम पुलकित हो रहा था। बारी बारी वो दोनों हाथों को चूमते रहे। फिर अचानक उन्होंने अपनी बाहें मेरी ओर फैला दी। मैं किसी अनजाने जादू से बंधी उनके सीने से लग गई। उन्होंने मुझे जोर से अपने बाहुपाश में

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

भींच लिया।

मेरे और उनके दिलों की धड़कन जैसे कोई प्रतियोगिता ही जीतना चाह रही थी। प्रेम धीरे धीरे मेरी पीठ पर हाथ फिराने लगे। अब उनके दोनों हाथ मेरे कानों के दोनों ओर आ गए और उन्होंने मेरा सर पकड़ लिया। मेरी लरजती आँखें किसी नए रोमांच में उनींदी सी हो रही थी, अधर कांप रहे थे और पलकें अपने आप मुंद रही थी।

ओह…. अचानक मैंने उनकी गर्म साँसें अपने माथे पर महसूस की। फिर उनके थरथराते होंठों से मेरा माथा चूमा और फिर मेरी बंद पलकों को चूम लिया। मैं तो बस बंद पलकों से उनके बरसते प्रेम को ही अनुभव करती रह गई।

उनके कांपते होंठ जैसे कह रहे थे ‘मधुर, आज मैं तुम्हारे इन लरजते अधरों और पलकों की सारी लाज हर कर इनमें सतरंगी सपने भर दूंगा मेरी प्रियतमा’

मैंने मन ही मन कहा ‘हाँ मेरे साजन !’ पर मैंने अपनी पलकें नहीं खोली। मैं भला उनके इस सुनहरे सपने को कैसे तोड़ सकती थी।

फिर उनके होंठ मेरे गालों से होते हुए मेरे अधरों पर आकर रुक गए। होले से बस मेरे अधरों को छू भर दिया। जैसे कोई आशना भंवरा किसी कलि के ऊपर बैठ कर होले होले उसका मकरंद पी लेता है। आह…. बरसों के प्यासे इन अधरों का प्रथम चुम्बन तो मेरे रोम रोम को जैसे पुलकित करने लगा।

मेरा मन अब चाहने लगा था कि वो जोर से मेरे अधरों को अपने मुँह में भर कर किसी कुशल भंवरे की तरह इनका सारा मधु पी जाएँ। आज मैंने जाना कि गुलाब की अधखिली कलि पर पड़ी ओस (शबनम) की बूँद पर जब सूरज की पहली किरण पड़ती है तो वो चटक कर क्यों खिल उठती है। अमराई की भीनी सुगंध को पाकर कोयलिया क्यों पीहू पीहू

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

बोलने लगती है।

'मधुर ?'
'हाँ मेरे प्रियतम !'

'मधुर मैं एक चातक की तरह अपने धड़कते दिल और लरजते होंठों से तुम्हारे अधरों को चूम रहा हूँ। आज तुमने मेरे उन सारे ख़्वाबों को जैसे पंख लगा कर हकीकत में बदल डाला है। मैं अपनी सपनीली आँखों में तुम्हारे लिए झिलमिलाते सितारों की रोशनी संजो लाया हूँ। तुम्हारे इन अधरों की मिठास तो मैं अगले सात जन्मों तक भी नहीं भूल पाऊँगा मेरी प्रियतमा !'

'मेरे प्रेम ! मेरे प्रियतम ! मेरे प्रथम साजन !... आह...' पता नहीं किस जादू से बंधी मैं बावरी हुई उनके होंठों को जोर जोर से चूमने लगी। आज मैंने जाना कि क्यों सरिता सागर से मिलने भागी जा रही है ? क्यों बादल पर्वतों की ओर दौड़ रहे हैं। क्यों परवाने अपनी जान की परवाह किये बिना शमा की ओर दौड़े चले आते हैं, पपीहरा पी कहाँ पी कहाँ की रट क्यों लगाए है। क्यों कोई कलि किसी भ्रमर को अपनी और ललचाई आँखों से ताक रही है....

एक बात बताऊँ ? जब रमेश भैया की शादी हुई थी तब मैं मिक्की (मेरी भतीजी) जितनी बड़ी थी। कई बार मैंने भैया और भाभी को आपस में चूमा चाटी करते देखा था। भाभी तो भैया से भी ज्यादा उतावली लगती थी। मुझे पहले तो अटपटा सा लगता था पर बाद में उन बातों को स्मरण करके मैं कई बार रोमांच में डूब जाया करती थी। प्रेम से सगाई होने के बाद उस रात मैंने मिक्की को अपनी बाहों में भर कर उसे खूब चूमा था। मिक्की तो खैर बच्ची थी पर उस दिन मैंने चुम्बन का असली अर्थ जाना था। हाय राम.... मैं भी कितना गन्दा सोच रही हूँ।

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

प्रेम ने मुझे अपनी बाहों में जकड़ रखा था। मैं अब चित्त लेट गई थी और वो थोड़ा सा मेरे ऊपर आ गए थे। उन्हने मेरा सर अपने हाथों में पकड़ लिया और फिर अपने जलते होंठ मेरे बरसों के प्यासे लरजते अधरों से जैसे चिपका ही दिए थे। मैंने भी उन्हें अपनी बाहों में जोर से कस लिया। उनके चौड़े सीने के नीचे मेरे उरोज दब रहे थे। उनके शरीर से आती पौरुष गंध ने तो मुझे जैसे काम विव्हल ही बना दिया था।
मुझे लगा मैं अपने आप पर अपना नियंत्रण खो दूँगी। मेरे लिए यह नितांत नया अनुभव था। मैं धीरे धीरे प्रेम के रंग में डूबती जा रही थी। एक मीठी कसक मेरे सारे शरीर को झनझना रही थी।

हम दोनों आँखें बंद किये एक दूसरे को चूमे जा रहे थे। कभी वो अपनी जीभ मेरे मुँह में डाल देते कभी मैं अपनी जीभ उनके मुँह में डाल देती तो वो उसे किसी कुल्फी की तरह चूसने लगते। कभी वो मेरे गालों को कभी गले को चूमते रहे। मेरे कोमल नर्म मुलायम अधर उनके हठीले होंठों के नीचे पिस रहे थे।
मुझे लग रहा था कहीं ये छिल ही ना जाएँ पुच की आवाज के साथ उनके मुँह का रस और आती मीठी सुगंध मुझे अन्दर तक रोमांच में सुवासित करने लगी थी। मैं तो बस उम्… उम्… ही करती जा रही थी।

अब उनका एक हाथ मेरे उरोजों पर भी फिरने लगा था। मुझे अपनी जांघों के बीच भी कुछ कसमसाहट सी अनुभव होने लगी थी। मुझे लगा कि मेरी लाडो के अन्दर कुछ कुलबुलाने लगा है और उसमें गीलापन सा आ गया है।

अब वो थोड़े से नीचे हुए और मेरे उरोजों की घाटी में मुँह लगा कर उसे चूमने लगे। मेरे लिए यह किसी स्वर्गिक आनंद से कम नहीं था। मैं तो आज चाह रही थी कि वो मेरी सारी लाज हर लें। मेरी तो मीठी सिसकियाँ ही निकलने लगी थी।

अचानक उनके हाथ मेरी पीठ पर आ गया और और कुर्ती के अन्दर हाथ डाल कर मेरी नर्म

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

पीठ को सहलाने लगे। मुझे लगा यह तंग कुर्ती और चोली अब हमारे प्रेम में बाधक बन रही है।

'मधुर!'
'उम्म्म... ?'
'वो... वो... मैं तुम्हारी कमर पर भी एक गज़रा लगा दूं क्या ?'

ओह... यह प्रेम भी अजीब आदमी है। प्रेम के इन उन्मुक्त क्षणों में इन्हें गज़रे याद आ रहे हैं। ऐसे समय में तो यह कहना चाहिए था कि 'मधुर अब कपड़ों की दीवार हटा दो!' मुझे हंसी आ गई।

प्रेम मेरे ऊपर से हट गया। मेरा मन उनसे अलग होने को नहीं कर रहा था पर जब प्रेम हट गया तो मैं भी उठ कर पलंग के दूसरी तरफ (जहाँ छोटी मेज पर गुलदान और नाईट लेम्प रखा था) खड़ी हो गई।

प्रेम ने मेरी कुर्ती को थोड़ा सा ऊपर करके मेरी कमर पर गज़रा बांध दिया। फिर मेरी नाभि के नीचे पेडू पर एक चुम्बन लेते हुए बोला 'मधुर! अगर तुम यह कुर्ती निकाल दो तो तुम्हारी पतली कमर और नाभि के नीचे गज़रे की यह लटकन बहुत खूबसूरत लगेगी।'

मैं उनका मनोरथ बहुत अच्छी तरह जानती थी। वो सीधे तौर पर मुझे अपने कपड़े उतारने को नहीं बोल पा रहे थे। अगर वो बोलते तो क्या मैं उन्हें अब मना कर पाती ? मैंने मुस्कुराते हुए उनकी और देखा और अपने हाथ ऊपर उठा दिए।

प्रेम ने झट से कुर्ती को नीचे से पकड़ कर उसे निकाल दिया। अब तो मेरी कमर से ऊपर केवल डोरी वाली एक पतली सी अंगिया (चोली) और अमृत कलशों के बीच झूलता मंगलसूत्र ही बचा था। मुझे लगा अचानक मेरे उरोज कुछ भारी से हो रहे हैं और इस चोली

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

को फाड़ कर बाहर निकलने को मचल रहे हैं।
मैंने मारे शर्म के अपनी आँखें बंद कर ली।

अब प्रेम ने मुझे अपने सीने से लगा लिया। उनके दिल की धड़कन मुझे साफ़ महसूस हो रही थी। उनके फिसलते हाथ कभी पीठ पर बंधी चोली की डोरी से टकराते कभी मेरे नितम्बों पर आ जाते। मेरी सारी देह एक अनूठे रोमांच में डूबने लगी थी।

अचानक उनके हाथ मेरे लहंगे की डोरी पर आ गए और इस से पहले की मैं कुछ समझूं उन्होंने डोरी को एक झटका लगाया और लहंगा किसी मरी हुई चिड़िया की तरह मेरे पैरों में गिर पड़ा। मेरी जाँघों के बीच तो अब मात्र एक छोटी सी पेंटी और छाती पर चोली ही रह गई थी। प्रेम के हाथ मेरी जाँघों के बीच कुछ टटोलने को आतुर होने लगे थे। मुझे तो अब ध्यान आया कि नाईट लैम्प की रोशनी में मेरा तो सब कुछ ही उजागर हो रहा है।

'ओह नहीं प्रेम... ? पहले यह लाइट... ओह... रुको... प्लीज...। ' मेरे लिए तो यह अप्रत्याशित था। मेरी तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। मैं अपने आपको उनकी पकड़ से छुड़ाने के लिए कसमसा रही थी ताकि नीचे होकर अपना लहंगा संभाल सकूं। हमारी इसी झकझोरन में मेरा हाथ साथ वाली मेज पर पड़े गुलदान से जा टकराया। इसी आपाधापी में में वो गुलदान नीचे गिर कर टूट गया और मेरी तर्जनी अंगुली में भी उसका एक टुकड़ा चुभ गया।

चोट कोई ज्यादा नहीं थी पर अंगुली से थोड़ा सा खून निकलने लगा था। प्रेम ने जब अंगुली से खून निकलता देखा तब उन्हें अपनी जल्दबाजी और गलती का अहसास हुआ।

'स... सॉरी... म... मधु मुझे माफ़ कर देना !'
'क... कोई बात नहीं !' मैंने अपनी अंगुली को दूसरे हाथ से पकड़ते हुए कहा।
'ओह.... सॉरी मधु... तुम्हारे तो खून निकलने लगा है !' वो कुछ उदास से हो गए।

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

अब उन्होंने पहले तो मेरा हाथ पकड़ा और फिर अचानक मेरी अंगुली को अपने मुँह में ले लिया। मैंने बचपन में कई बार ऐसा किया था। जब कभी चोट लग जाती थी तो मैं अक्सर उस पर दवाई या डिटोल लगाने के स्थान पर अपना थूक लगा लिया करती थी। पर आज लगी इस चोट के बारे में कल जब मीनल पूछेगी तो क्या बताऊँगी ?
मुझे बरबस हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि की एक कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आ गई :

नई नवला रस भेद न जानत, सेज गई जिय मांह डरी
रस बात कही तब चौंक चली तब धाय के कंत ने बांह धरी
उन दोउन की झकझोरन में कटी नाभि ते अम्बर टूट परी
कर कामिनी दीपक झांप लियो, इही कारण सुन्दर हाथ जरी
इही कारण सुन्दर हाथ जरी…

अब प्रेम ने उठ कर उस नाईट लैम्प को बंद तो कर दिया पर रोशनदान और खिड़की से आती चाँद की रोशनी में भी सब कुछ तो नज़र आ ही रहा था। रही सही कसर बाथरूम में जलती लाइट पूरी कर रही थी। अब तो मेरे शरीर पर केवल एक चोली और पेंटी या गज़रे ही बचे रह गए थे। मैंने लाज के मारे अपना एक हाथ वक्ष पर रख लिया और दूसरा हाथ अपने अनमोल खजाने पर रख कर घूम सी गई।

ओह… मुझे अब समझ आया कि गज़रा लगाना तो एक बहाना था वो तो मेरे कपड़े उतरवाना चाहता था। कितना नासमझ है यह प्रेम भी। अगर वो मुझे स्वयं अपने कपड़े उतारने को भी कहता तो क्या मैं इस मधुर मिलन के उन्मुक्त पलों में उन्हें मना कर पाती ?

प्रेम कुछ शर्मिंदा सा हो गया था उसने मुझे पीछे से अपनी बाहों में भरे रखा। उनका एक हाथ मेरी कमर पर था और दूसरा मेरे उरोजों पर। वो मेरी पीछे चिपक से गए थे।
अब मुझे अपने नितम्बों पर कुछ कठोर सी चीज की चुभन महसूस हुई। मैंने अपनी जांघें कस कर बंद कर ली।

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

पुरुष और नारी में कितना बड़ा विरोधाभास है। प्रकृति ने पुरुष की हर चीज और अंग को कठोर बनाया है चाहे उनका हृदय हो, उनकी छाती हो, उनका स्वभाव हो, उनके विचार हों या फिर उनके कामांग। पर नारी की हर चीज में माधुर्य और कोमलता भरी होती है चाहे उसकी भावनाएं हों, शरीर हो, हृदय हो या फिर उनका कोई भी अंग हो।

प्रेम कुछ उदास सा हो गया था। वो अपनी इस हरकत पर शायद कुछ शर्मिंदगी सी अनुभव कर रहा था। मैं अपने प्रियतम को इस मधुर मिलन की वेला में इस प्रकार उदास नहीं होने देना चाहती थी। मैं घूम कर फिर से उनके सीने से लग गई और उनके गले में बाहें डाल कर उनके होंठों पर एक चुम्बन ले लिया।

जैसे किसी शरारती बच्चे को किसी भूल के लिए क्षमा कर दिया जाये तो उसका हौसला और बढ़ जाता है प्रेम ने भी मेरे होंठों, गालों और उरोजों की घाटी में चुम्बनों की झड़ी ही लगा दी। इसी उठापटक में मेरा जूड़ा खुल गया था और मेरे सर के बाल मेरे नितम्बों तक आ गए।

कई भागों में समाप्य!

आपका प्रेम गुरु
premguru2u@gmail.com
premguru2u@yahoo.com

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

Other stories you may be interested in

लण्ड कट जाएगा.. ऐसा लगा-1

मेरा नाम ऋषि है, मैं छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव से हूँ। आप सोच रहे होंगे कि यह कैसा शीर्षक है कहानी का 'लण्ड कट जाएगा.. ऐसा लगा' यह भी कोई शीर्षक है.. लेकिन यह शीर्षक मेरे और मेरी […]
Full Story >>>

मेरी सहेली की चुदासी चूत की कहानी

दोस्तो, मैं आप को अपनी सहेली मीरा की कहानी सुनाने जा रही हूँ। इसमें उसने मुझे जो बताया उसे सुन कर मैं दंग रह गई कि क्या कोई पति अपनी पत्नी के साथ ऐसा भी कर सकता है। उसने मुझे […]
Full Story >>>

आजकल का विवाहित जीवन

मैं अन्तर्वासना साइट पर हिन्दी सेक्स कहानी पढ़ने अक्सर आता हूँ। कुछ बहुत ही अच्छी होती हैं, कुछ बहुत बुरी होती हैं। हाँ, अधिकतर बस ठीक-ठाक सी ही होती हैं। दरअसल 'काम' के बारे में अपने देश में अधिकतर लोगों […]
Full Story >>>

लागी लंड की लगन, मैं चुदी सभी के संग-7

हमारे कमरे का दरवाजा बाहर से बन्द देख सभी आश्चर्य में थे केवल एक अमित जीजा को छोड़कर… उसकी कुटिल मुस्कान भी बता रही थी कि ऐसी हरकत उसी ने की है। उसकी कुटिल मुस्कान देखकर मेरा गुस्सा और बढ़ता […]
Full Story >>>

मेरी जान अंकिता की बुर

अन्तर्वासना के सभी पाठकों को मेरा नमस्कार ! मैं अरनव हूँ.. यह मेरी पहली कहानी है.. जो मैं अन्तर्वासना पर लिख रहा हूँ। मैं आप सभी को बता दूँ कि मैं दिखने में एक सुन्दर लड़का हूँ.. मेरे लण्ड का साइज […]
Full Story >>>

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

Other sites in IPE

Velamma

Vela as her loved ones like to call her is a loving and innocent South Indian Aunty. However like most of the woman in her family, she was blessed with an extremely sexy figure with boobs like they came from heaven! Visit the website and check the first 3 episodes for free.

Antarvasna

अन्तर्वासना के पाठकों के प्यार ने अन्तर्वासना को दुनिया की सर्वाधिक पढ़े जाने वाली सर्वश्रेष्ठ हिन्दी व्यस्क कथा साईट बना दिया है। अन्तर्वासना पर आप रोमांटिक कहानियाँ, सच्ची यौन घटनाओं पर आधारित कहानियाँ, कपोल कल्पित सेक्स कहानियाँ, चुटकले, हास्य कथाएँ पढ़ रहे हैं। Best and the most popular site for Hindi Sex Stories about Desi Indian Sex. अन्तर्वासना पर आप भी अपनी कहानी, चुटकले भेज सकते हैं!

Bangla Choti Kahini

বাংলা ভাষায় নুতন বাংলা চটি গল্প, বাংলা ফন্টে বাংলাদেশী সেক্স ষ্টোরি, বাংলা পানু গল্প ও বাংলা চোদাচুদির গল্প সংগ্রহ নিয়ে হাজির বাংলা চটি কাহিনী

Desi Tales

Indian Sex Stories, Erotic Stories from India.

Indian Sex Stories

The biggest Indian sex story site with more than 40 000 user submitted sex stories. Go and check it out. We have a story for everyone.

Indian Porn Live

Go and have a live video chat with the hottest Indian girls.

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire